भोग लगाना कोई ज्ञान नहीं है। यह तो ब्राह्मणों की एक रसम–रिवाज़ है, जो सम्पूर्ण देवताएँ कहें या फरिश्ते कहें, उनको भोग लगाते हैं वा शिव के नाम पर भोग लगाते हैं, बाप को भोग लगाते हैं। यह तो समझाया गया है कि जिससे हमको मिलता है उसको पहले ज़रूर खिलाना है, भोग लगाना है। तुम बच्चे तो यहाँ आए हुए हो, तुम जानते हो कि हम शिवबाबा के पास आए हुए हैं और यह शिवबाबा का भण्डारा है। इस भण्डारे की बहुत महिमा है। कहते हैं कि ये देवता भी... क्योंकि देवता भी इस ब्राह्मणों से देवता बने हैं। वहाँ तो देवता बने। कैसे बने? शिव के भण्डारे से यह पवित्र भोजन पा करके। यह गाया जाता है ना जिस भण्डारे से खाया सो भण्डारा भरपूर, काल कंटक दूर। जब तुम शिवबाबा के बने हो तो जानते हो कि बरोबर 21 जन्म हमको काल नहीं खाएगा; क्योंकि हम अमर बन जाते हैं, अमरलोक के निवासी बनते हैं। यह कोई वो साधु–संतों का या महात्माओं का या गीता,वेदों,उपनिषदों का ऑर्डिनरी कॉमन सतसंग तो नहीं है। तुम यहाँ आए ही हो बेहद के बाप के पास। तुम्हारी प्रतिज्ञा भी ऐसी है (कि) और कोई भी देहधारी को हम याद न करेंगे। याद आपको ही करेंगे। यह ज़रूर है कि आप कोई देहधारी से हमको नॉलेज देंगे। वो नॉलेज हम ग्रहण करते हैं जानते हुए कि शिवबाबा हमको सहज राजयोग सिखला रहे हैं। हमारी उन एक से ही प्रीत है। और जो भी हैं उनसे हमारी अभी कोई सच्ची प्रीत नहीं है। प्रीत सच्ची उनसे है, हम उनके बने हुए हैं। बाकी तो ये सभी पुरानी दुनिया है, इनसे तो हमारी प्रीत है नहीं। हमारी देह से भी प्रीत नहीं है, कोई के नाम–रूप से भी प्रीत नहीं है। इनसे भी कोई प्रीत नहीं है; क्योंकि एक बाप से प्रीत है, जो सिर्फ इन द्वारा वा इन बच्चों द्वारा बच्चों को रास्ता बता रहे हैं। कौन–सा रास्ता? मुक्ति और जीवनमुक्ति का। तुम बच्चों का धंधा ही यह हो गया है कि हर एक को हम बाप का परिचय देवें। उनको रचता का और रचना के आदि,मध्य,अंत का समाचार सुनावें। तुम बच्चे ये धंधे में लगे पड़े हुए हो। याद करते हो सिर्फ एक को ; क्योंकि जितना एक को याद करते हो, विकर्म विनाश होते हैं और हेल्दी बनना है, आयु बड़ी होनी है। अगर उनको याद नहीं करते हो, कोई देह को याद किया तो फिर कहा जाता है देहअभिमानी। इसलिए यहाँ प्रीत है ही एक प्रियतम से, और कोई से भी प्रीत... इनसे कोई तुम्हारी प्रीत नहीं है। देहधारियों से कोई हमारी प्रीत नहीं है। ...इन आँखों से तो इनको देखते हैं; पर हमारी आत्मा कहती है (कि) हमारी बुद्धि उस तरफ में है। उनको याद करते हैं। उनको याद करते–2 ..... अगर उनकी याद भूल, कोई भी देह की या अपनी देह की या और की याद करते हैं तो हमारे जो विकर्म भस्म होने हैं योगबल से वो रह जाते हैं और फिर बल भी नहीं मिलता है। इसलिए जो कुछ भी करते, कर्म करते, उठते,बैठते,चलते याद करना है उनको। कोई भी देहधारी को नहीं। अभी देखो, तुम बच्चे बैठे हुए हो। बाप पूछेंगे कि बच्चे, तुम यहाँ किसकी याद में बैठे हो? तुम क्या कहेंगे? तुम ऐसे तो नहीं कहेंगे कि हम माँ की या फलाने की याद में बैठे हैं। तुम फट कहेंगे कि हम शिवबाबा की, परमपिता परमात्मा की याद में बैठते हैं। कुछ भी हो जाए तो भी हमको याद बाबा की रखनी है, जिससे ही हमारा कल्याण होना है। ...उनकी याद बिगर किसकी भी याद से हमारा अकल्याण बन जाता है। तो देखो, बच्चों को है ही; क्योंकि सतसंग कोई वो तो नहीं है। वो तो है असत् संग। तुम यहाँ बैठे हो सत् के...। हम शिवबाबा के बने हैं और शिवबाबा को ही याद करेंगे। जैसा शिवबाबा है ज्ञान का सागर, आनंद का सागर, सुख का सागर, शांति का सागर। हम उनसे ये सभी वर्से में ले रहे हैं। लेते रहते हैं, लेते रहते हैं, याद करते रहते हैं और ये जो भी अवगुण हैं, जो पाँच विकार हैं, उनको तिलाजंली देते रहते हैं, छोड़ते रहते हैं। किससे? इस बल से। तो याद तो उनको ही करना है ना। बस और कोई देहधारी को याद किया तो देहअभिमानी बन गया, जैसे कि फेल हो गया। बाप से बुद्धि का योग तोड़ और देह से जोड़ा तो व्यभिचारी हो जाते हैं। अपनी देह से भी जोड़ते हैं, पुरानी है, तो भी व्यभिचारी बन जाते हैं; क्योंकि अपनी देह का भी अहंकार आ गया तो बाप से बुद्धि का योग टूट जाता है। फिर क्या होता है? माया का थप्पड़ लग जाता है। इसलिए बड़ी खबरदारी चाहिए; क्योंकि यहाँ की तो नॉलेज ही और है। यहाँ कोई शास्त्र,वेद,यज्ञ,तप,दान,पुण्य या ये साधु–संत–महात्माओं को... । यह तो तुम जान गए कि ये सभी पतित हैं। यह शरीर भी पतित है। आत्मा को पावन

होना है परमपिता परमात्मा को याद करने से। और कोई उपाय नहीं है। तो फिर निरंतर हर एक बात में जो बाबा के डायरेक्शन हों... श्रीमत है ना। तो बोलते हैं श्रीमत कहती है तो और कोई भी बात में इंटरफियर मत करो। कभी भी आँसू नहीं बहाओ; क्योंकि तुम तो ईश्वरीय संतान हो ना। निश्चय है कि बरोबर हम ईश्वरीय संतान हैं, ईश्वर से वर्सा लेते हैं। ईश्वर स्वर्ग का रचता। फिर से हम बाबा से वर्सा लेते हैं। बुद्धि में ज्ञान आ गया कि बरोबर हम 84 जन्म का चक्कर लगाय अब बस बाप के ही पास जाना है तो बस बाप को याद करना है, तो विकर्म विनाश हो जाए, अंत मते सा गत। कोई भी ज़रा भी उनको भूलते हैं या और कोई में प्रीत जाती है तो फिर एक से तो प्रीत न जुटी। प्रियतम तो एक ही है और हर एक का प्रियतम एक है। अभी जो जितनी प्रीत लगावे और उनकी श्रीमत पर चलेगा वो इतना ही ऊँचा पद पाएंगे। जबकि हम ऐसे प्रियतम के हैं तो हम तो बिल्कुल ही खिले फूल हैं। जब वो प्यारे ते प्यारा प्रियतम है तो हम दूसरे की याद करें क्यों ? हमको निरंतर उनसे ही सुनना, उनसे ही बैठना, उनसे ही खाना (है)। तुम्हारा होता ही यह है। कहाँ भी होवें तो भी हमको उनसे ही सुनना है। कोई भी वेद,शास्त्र,ग्रंथ वगैरह नहीं पढ़ना है। वो पढ़ाई की, धंधे–धोरी की बात तो अलग रहती है; परन्तु याद तो उनको ही करना है और सुनना भी उनसे ही है। वास्तव में बहुत सुनने का भी है नहीं। बस, बाबा को याद करना है– यह सुनना है, ये ज्ञान और फिर चक्कर फिराना है– ये ज्ञान। देखो, एक सेकेण्ड का ज्ञान है ना। तो स्वदर्शन चक्रधारी बनना है। उठते,बैठते,चलते हमारी बुद्धि में बाप, सृष्टि का चक्र और अपनी बादशाही। सृष्टि का चक्र है तो भी चक्रवर्ती राजा ही बनना है। स्वदर्शन चक्रधारी बनना वो भी तो बादशाही है। तो तुम्हारी और कोई भी बातों में या संशय में बुद्धि चलायमान नहीं होनी चाहिए। एकरस अवस्था चाहिए जैसे कि पिछाड़ी में गाई हुई है। रावण का राज्य पूरा होता है तो देखो वो आते हैं। यह ऐसे ही बात करके कही है। बरोबर हनुमान का.... एक (की) तो बात नहीं है ना। यहाँ तो तुम सब महावीर हो। तो उसको कितना भी लोड़ा आया, कितनी भी परीक्षा आई, वो अपने बाप की मौज़ में मौज़ रहे, हँसते रहे, हर्षित होता रहे। यहाँ भी तुम बच्चों को सदैव हर्षित चेहरा चाहिए; क्योंकि तुम्हारा हर्षित चेहरा जो ज्ञान से रहता है वो अविनाशी हो जाने का है। यहाँ कभी भी मुरझाया चेहरा...। पतियों का पति इतना... तुम जानते हो कि हम पियर घर से ससुर घर जाने वाले हैं। तो ऐसे पिऊ, पिऊ भी कौन? प्रजापिता ब्रह्मा और शिव। बस इनसे जास्ती अथॉरिटी तो कोई है नहीं। कोई है बच्चे? नहीं। वो आत्माओं का पिता और वो शरीरों का बड़ा (ते) बड़ा पिता। अभी तो तुम उनको फादर ही कहेंगे। इसके पहले तुम प्रजापिता ब्रह्मा को क्या कहेंगे? ग्रेट ग्रेट ग्रैण्ड फादर यानी सभी मनुष्य सृष्टि का रचता। अभी तुम डायरेक्ट बैठे हो। पीछे इस ज्ञान के पहले तुम कुछ जानते ही नहीं हो; परन्तु बाप समझाते हैं कि बरोबर प्रजापिता द्वारा बाबा ब्राह्मण रचते हैं। यह चोटी देखो। तुम चोटी थे, ब्राह्मण वर्ण के थे (फिर) देवता,क्षत्रिय,वैश्य, अभी आकर पैरों पर पड़े हो। फिर तुमको ब्राह्मण बनना होता है। तो बस इसी तांत में रहना है, पढ़ाई में ही रहना है। कोई मर जाते हैं.... वो बाप है, हम उसके बच्चे हैं। उनको उनसे काम कराना है। देखो, तुम्हारे से भी काम कराते हैं ना। कोई भी बड़ा अच्छा है, बोलते हैं मैं इनसे और कुछ काम करा लेता हूँ। वो कल्याणकारी है; क्योंकि तुम सब बच्चे हो ही कल्याणकारी। शरीर छोड़ करके कहाँ भी जाएँगे तो जा करके कोई न कोई का कल्याण ही करेंगे। इसलिए तुम्हारे पास कोई भी बात का अफसोस नहीं होना चाहिए यानी परमपिता परमात्मा के बच्चों को अफसोस कहाँ से आवे; क्योंकि तुम्हारी ये लाइफ मोस्ट वैल्युएबल लाइफ है, जो तुम सर्विस करते हो। अभी तुम सब सोसाइटी की, भारत की खास, सबकी बड़ी सेवा कर रहे हो। किससे? ये योगबल से पवित्र रह करके; क्योंकि योगबल .....। तुम जानते हो कि हम इस भारत को, जो पतित है, पतित–पावन की मदद से हम खुद भी पावन बनते हैं, सारी सृष्टि को पावन... । सब चीज़ को एकदम, तत्वों को भी पवित्र बनाते हो। तो देखो, नशा चाहिए ना हम बाबा की मत पर इस भारत खास (और) वर्ल्ड को हैविन बनाते हैं। तुमको यह नशा रहना चाहिए ना। कैसे? बस, मन्मनाभव, मद्याजीभव। बाकी यह चक्र का राज़, यह पत्तों का राज़, सभी शास्त्रों का यह बैठ करके राज़ समझाते हैं कि कैसे इनमें कोई सार नहीं है। कोई चीज़ में

सार नहीं है; क्योंकि जो कुछ भी तुम करते आए हो, तुमको सिखलाया जाता है तुम्हारी कला गिरती जाती है, कमती होती जाती है, तहाँ कि आ करके एकदम पतित बने हो। सब एक मत पुकारते हैं– हे पतित–पावन, आओ! तो देखो, सब हो गए ना। बाप भी आकर ऐसे ही कहते हैं.. मैं सब, जो साधु लोग हैं, उनका भी उद्धार करने मुझे आना पड़ता है; क्योंकि वो भी भ्रष्टाचारी हैं। बाबा, भ्रष्टाचारी क्या करते हैं? अरे, मूत से पैदा हुए हैं ना तो भ्रष्टाचारी हैं और फिर वो क्या करते हैं? जानते तो कुछ भी नहीं हैं, नाम गुरू का रखवाय दिया है। गुरू का काम है सद्गति, ये गुरू तो दुर्गति को पहुँचाते हैं। जो कुछ भी कराते आते हैं, जप,तप,तीर्थ,यज्ञ,दान,पुण्य करते आए हो, कहाँ आ गए हो? तुम सभी गिर पड़ते हो। यह तो तुम गाते हो कि भक्ति माना दुर्गति, रात। भक्ति माना सद्गति...। भगत सद्गति में थे, फिर भक्ति में आय गिरने लगे। अव्यभिचारी और व्यभिचारी भक्ति करते–2 उल्टा यह हाल आ करके हुआ है। अभी पुकारते हो कि पतित–पावन, आओ। तो एक को पुकारते हो ना। तो बस बच्चों को बाप की मत पर चलना पड़ता है। मुझे याद करते रहो। यह गंगा स्नान वगैरह–2 से कोई पतित–पावन नहीं बन सकते हैं, न कि यह जल कोई सागर से निकला। नहीं। ये हैं ज्ञान गंगाएँ, ज्ञान सागर से निकली हुई हैं। इन्हों द्वारा तुम पतित से पावन बन सकते हो। इसको फिर ज्ञान स्नान कहा जाता है। बाकी स्नान कोई पानी नहीं है जो स्नान...। तो स्नान अक्षर रखने से ही मनुष्य मूँझ पड़े हैं। नहीं तो है तो नॉलेज। देखो, क्या है नॉलेज! सब जान जाते हो। परमपिता परमात्मा की बायोग्राफी को जान जाते हो। सारे ड्रामा में जो उनकी एक्ट चलती है तुम उनको जान जाते हो। तो यह कहाँ से जानेंगे? बोलते हैं फादर शोज़ सन। तो जिसने सब सन्स को सुनाया ; क्योंकि वो आत्मा सुनती है ना। कहते भी हैं कि बरोबर बाप आया हुआ है बच्चों को सुनाने। यह आत्मा को पवित्र करना है। यह आत्मा को ज्ञान का इंजेक्शन लग रहा है। तो बस उनको ही याद करना है और खुशी में (यानी) हर्षितमुख रहना चाहिए। कोई ठहाका नहीं छोड़ने का है। गुप्त ; क्योंकि तुम गुप्त वॉरियर्स हो। बाबा भी गुप्त है, बच्चे भी गुप्त हैं। इसलिए इसको इनकॉगनिटो कहा जाता है। देखो, कोई भी नहीं जानते हैं; क्योंकि गीता में कॉगनिटो का नाम डाल दिया, राजयोग सिखलाने वाले कृष्ण का। वो तो कॉगनिटो है ना। वो होवे तो सब आकर एकदम उनके बन जावें। गले में, कच्छ में कृष्ण को ले करके एकदम घर भाग जावे। नहीं, ये इनकॉगनिटो (है)। बाप कहते हैं मैं गुप्त वेश में इनमें आया हुआ हूँ और वो कोई शास्त्र वगैरह में है नहीं। बरोबर जानते भी हैं कि परमपिता परमात्मा ब्रह्मा द्वारा स्थापना करते हैं। कैसे स्थापना करते हैं, वो तो कहाँ लिखा हुआ है नहीं। वो तो गीता में कृष्ण का डाल दिया। बाप भी तो समझाते रहते हैं– ...इसलिए और कोई भी नहीं, बच्चे जो बिचारे एकदम मूँझे हुए हैं, बाप को नहीं जानते हैं, ऑरफन्स बन गए हैं, निधण के बन गए हैं, दुःखी बन गए हैं, उनके ऊपर जैसे बाप रहम करते हैं तैसे तुम भी रहम करो। उनको परिचय दो कि बाप से सदा सुख का वर्सा पाय लेवे। आधा कल्प बाप को याद किया है। पूरा धक्का खाया है, यहाँ खाया, वहाँ खाया। यह भक्तिमार्ग है एक गिरने का मार्ग। जो है ही भक्ति। ज्ञान है नहीं, बाकी है भक्ति, तो महिमा तो उनकी रहेगी ना। अब जब ज्ञान है तो देखो भक्ति को छोड़ देते हैं। कुछ भी नहीं (है)। बाबा से(को) याद रखना है..... और बाबा के पास जाना है, बिल्कुल सहज रास्ता कि अंत मते सा गत। अभी अंत मते सा गत के लिए वो नहीं है कि पिछाड़ी में बैठ करके राम–2 कहो तो कोई उनकी सद्गति हो सकती है। नहीं, वो तो उनको माँ–बाप, बच्चा, धन–दौलत सब याद पड़ जाती है। यहाँ तुमको देह सहित सब कुछ भूल अपन को आत्मा निश्चय करो। हम नंगे थे, हमारा घर वहाँ है। ये पार्ट बजाकर अभी हमारा कपड़ा पूरा हो गया ... पुरानी–2 हो गई। अभी बाबा कहते हैं– बच्चे चलो। तो जैसे कि हम एक्टर्स हैं, 84 जन्म का पूरा पार्ट बजाकर अभी हम वापस जाते हैं। इसलिए इन पुराने कपड़ों से, पुरानी दुनिया से, कोई से भी हमारा बिल्कुल ममत्व नहीं है। हमारा तो एक है जो हमको फिर विश्व का मालिक बनाते हैं। बाबा कहते हैं फिर दूसरे को याद नहीं करना चाहिए। भले गृहस्थ व्यवहार में रहे पड़े हो, वहाँ रहते हुए पवित्र भी रहो। वो भी तो समझाया जाता है ना पवित्र भी रहो, कोई भी विकार नहीं, भूत नहीं आना चाहिए और मुझे याद करो। मुझे याद

करते रहेंगे तो स्वतः ही तुम्हारे पास भूत नहीं आएगा। इसलिए बाबा कहते हैं कि और सभी बाहर की जो बातें कि यह मरा, यह फलाना हुआ। नहीं, वो तो शरीर छोड़ा। बाप ने कहा कि इनसे हमको बहुत कुछ अच्छा कार्य कराना है। तुम अपने मन्मनाभव, मद्याजीभव में, अपनी कमाई में लग जाओ। बाकी दूसरी कोई भी फिकरात या वातावरण या मुरझाना या फलाना (इसमें) मत रहो। इसलिए बाप को ही याद करते रहो और अपना वर्सा लेते रहो। बस। और कोई भी इसमें संशय बुद्धि मत बनो। संशयबुद्धि फिर कहते हैं कि विनश्यन्ति यानी विनाशी पद पाएगा। संशय होगा (तो) क्या करेंगे? पता नहीं क्या है, झूठ है, अच्छा हम पढ़ाई छोड़ देते हैं। मरा। पढ़ाई छोड़ दिया, खेल ही खलास। तो कोई भी संशय में बिल्कुल नहीं आना चाहिए। भले कितने भी कड़े ते कड़े तूफान आवे। ....बाबा से योग, याद और उनसे वो चक्र का– ये कभी नहीं छोड़ने का है। अगर छोड़ा तो मरा। अपना ही पद भ्रष्ट कर देंगे। इसलिए बाप आकर हमेशा कहते हैं– चीअरअप बच्चे। बाप को याद करते रहो और बाकी साक्षी हो करके यह खेल देखते रहो। कभी भी मुरझाओ मत; क्योंकि जिनको इतना बाप मिला, इतना जो तुमको 21 जन्म का मिलता है तो उसी खुशी में रहना चाहिए ना।.....जो–2 बाप को याद करते हैं, ये चक्र फिराते हैं, औरों को सिखलाते हैं, उसी धुन में लगे रहो। उसी धुन में कोई भी विघ्न नहीं डालना है। जो कुछ भी होवे उसमें तुम्हारा क्या काम! यह तो बाप जानें और बच्चे को जानें। बाप कोई बच्चे को कोई काम पर ले जाते हैं, उसमें तुम्हारा क्या जाता है! क्योंकि तुम बच्चे अभी वास्तव में अमर माना कि काल पर जीत पहनने वाले बनते हो। सो भी तो वहाँ बनेंगे ना। ...यहाँ तो काल खाना ही है। अमर बनना है वहाँ। वहाँ तुम्हारी चलेगी। तब यह ज्ञान पूरा हो जाएगा। बाकी यहाँ तो कोई गया, कोई भाई गया, अच्छा–2 गया, चलो। .... मुट्ठी मर पड़ती है..। तो क्या हुआ? क्या हम बाबा से योग तोड़ेंगे? कोई के शरीर के ऊपर अफसोस करते हैं (तो) हम भी अज्ञानी ठहरे। जैसे अज्ञानी अफसोस करते हैं, वैसे हम। यह तो एकदम जबरदस्त, बड़ी भारी मंज़िल है। रोने का नाम–निशान नहीं। जबकि पति हमारा, जिसको पतियों का पति कहते हैं। हम सजनी तो हैं ना। ब्राइड्स हैं ना। वो ब्राइडग्रुम है ना। तो ब्राइडग्रुम तो हमेशा जिन्दा है और वो हमको स्वर्ग का मालिक बनाने के लिए शृंगार रहे हैं। हमको वही खुशी...। हम दूसरी बात सुनते ही नहीं, जानते नहीं। कभी भी नहीं। यह तो होता रहेगा। इसलिए कभी भी, ज़रा भी हिचकना नहीं है। महावीर बनना है। अभी नहीं बने हो। अभी कभी मोह.. हो जाता है। ...कभी कहाँ कोई नाम–रूप में फँस मरते हैं। नहीं–2, तुमको ज्ञान सुनना है। बरोबर आत्मा सुनाती है। आत्मा परमात्मा से सुनती है, फिर वो बैठ करके शरीर द्वारा सबको सुनाती रहती है। इसलिए आत्मअभिमानी बनना है और सदैव बाप को याद करते रहना है। और कोई बात में... सदैव हर्षित..कुछ भी हो जाए। देखो, तुमको मोहजीत राजा बनना है ना। वो मोहजीत थे। वो कहाँ से ऐसे कर्म किए जो इतने मोहजीत बने? अभी यहाँ तुमको मोहजीत बनना है। कोई में भी मोह नहीं, शरीर में कोई में भी मोह नहीं। मोह एक में, बस दूसरा न कोई। ऐसे पक्के बनेंगे तभी ऊँच पद पाएँगे, पास विथ ऑनर होंगे। अच्छा! अभी मीठे–2 बच्चों को गुड ईवनिंग।